

विश्वास करने का क्या अर्थ है?

उद्धार पाने के एकमात्र ढंग का ज्ञानप्रद, प्रेरणादायक और अधिकारात्मक उदाहरण प्रेरितों 16:25-34 में वर्णित फिलिप्पी दारोगे और उसके परिवार के मन परिवर्तन की घटना में मिलता है। इस कठोर मन वाले दारोगे के मन में उन दो कैदियों के प्रति कोई हमदर्दी नहीं थी, जिनकी पीठों पर पिटाई के कारण न केवल कोड़ों और चाबुकों के निशान थे बल्कि लहू भी बह रहा था। दयालु होने की चिन्ता किए बिना, जेल के इस दारोगे के मन में केवल एक ही बात थी कि उसके उच्च अधिकारियों ने उसे अतिरिक्त सुरक्षा के आदेश दिए थे। इस कारण, उसने न केवल पौलुस और सीलास को अंधेरी कोठरी में रखा बल्कि उनके पांव भी बेड़ियों से बांध दिए थे।

सो रहा दारोगा भूकंप के कारण चौंक उठा, क्योंकि भूकंप इतना ज़बरदस्त था कि जेल की दीवारें टूट गई थीं और द्वार खुल गए थे। दारोगे को यह पता चलने पर कि कोई कैदी भागा नहीं है, समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अचानक उसे पता चला कि एक महान शक्ति, जिसके नियन्त्रण में संसार है, उन कोड़े खाए हुए दो व्यक्तियों के साथ थी जिन्हें बेड़ियों में बांधा गया था। अवसर मिलने पर भी ये लोग जेल से भागे नहीं थे! किसी अदृश्य शक्ति ने दोषी कैदियों को भी रोक दिया था! संसार की सबसे बड़ी शक्ति से उन मार खाए हुए दो कैदियों के पक्ष में लग रही थी। डरे हुए, उस दारोगे ने चाहा कि वह शक्ति उसके पक्ष में भी हो जाए! वह अब उन लोगों का आदर करने को भी तैयार था जिनकी पहले उपेक्षा कर रहा था। उसे समझ आ गई कि वे तो उस महान शक्ति के प्रवक्ता हैं! इस घटना से उस दारोगे को अहसास हुआ कि उन लोगों की बातों का विरोध करना गलत है। उनके हर आदेश को मानना चाहिए था। डरते और कांपते हुए, वह उन दोनों के पांवों पर गिर गया जिन्हें संसार के शासक की ओर से इतना समर्थन मिला था। फिर, उनको जेल से बाहर ले जाते हुए, उसने आश्चर्य से पूछा, “हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?”

उद्धार पाने के लिए? वह कहना क्या चाहता था? क्या वह भूकंप से आने वाली मृत्यु से बचना चाहता था? यदि उसके मन में यह बात थी, तो पौलुस ने उसकी सोच को बदलकर उस छुटकारे की ओर ध्यान दिलाया जो मसीह यीशु में है। मसीह ने किसी को भूकंप से बचाने की कोई प्रतिज्ञा नहीं की है। यीशु दो प्रकार से (1) पाप के दोष से छुटकारा

(मत्ती 26:28; लूका 19:10; यूहन्ना 8:24; प्रेरितों 22:16) और (2) नरक अर्थात् “आने वाले क्रोध” से छुटकारा (1 थिस्सलुनीकियों 1:10; देखिए मत्ती 25:41; मरकुस 9:47, 48) देकर उद्धार देता है।

“उद्धार पाने के लिए” वाक्यांश में दारोगे द्वारा कर्मवाच्य के इस्तेमाल में एक महत्वपूर्ण सच्चाई मिलती है। एक पापी अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता, बल्कि वह पूरी तरह से किसी दूसरे पर निर्भर है। यदि कोई मनुष्य अपने अच्छे कर्मों से अपना उद्धार कर सकता, तो उसे यीशु की आवश्यकता न होती। वह मसीह से कह सकता था, “आप ने मेरे लिए मर कर बहुत अच्छा किया है, परन्तु मुझे ऐसे बलिदान की कोई आवश्यकता नहीं थी।” सच्चाई यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने आपको पाप के एक भी दोष से छुड़ा नहीं सकता। केवल परमेश्वर ही कह सकता है, “तेरे पाप क्षमा हुए।” दारोगे ने यह समझकर कि उद्धार उसके वश की बात नहीं, विनम्र होकर उचित ढंग अपनाया।

दूसरी ओर, “करूं” शब्द का इस्तेमाल करके वह एक महान सच्चाई को भी व्यक्त कर रहा था। यद्यपि सुनिश्चित तौर पर, अपने उद्धार को कमाने के लिए एक पापी कुछ भी नहीं कर सकता (इफिसियों 2:8, 9), केवल उद्धारकर्ता ही है जो उसका उद्धार करता है, जो उसकी इच्छा “पर चलता” (मत्ती 7:21) और उसकी आज्ञा मानता है (इब्रानियों 5:9)। सही बात बता दिए जाने पर एक पापी को इन आज्ञाओं को पूरा करने में कोई घमण्ड नहीं लगता (लूका 17:10)। वह जानता है कि वह अपने कर्मों से नहीं, बल्कि अनुग्रह से उद्धार पाया हुआ पापी ही रहेगा, क्योंकि वह अपने उद्धार को कमा नहीं सकता (रोमियों 4:4, 5; इफिसियों 2:8, 9)।

जेल के दारोगे द्वारा “मैं” शब्द का इस्तेमाल करने पर एक और महत्वपूर्ण सच्चाई सामने आई। सर्वनाम शब्द “मैं” के इस्तेमाल का अर्थ है कि हम यह नहीं पूछ रहे कि उद्धार पाने के लिए हाबिल या इब्राहीम या मूसा या क्रूस पर चढ़े उस डाकू को क्या करना चाहिए। “मैं” शब्द का अर्थ है कि हम कह रहे हैं, कि “मैं यह जानना चाहता हूँ कि आज उद्धार पाने के लिए एक पापी को क्या करना चाहिए अर्थात् यह नहीं कि पुरखाओं के समय, व्यवस्था के काल में, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय या मसीह की व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान बल्कि अब अर्थात् मेरे समय में उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए।” ऐसा शब्द यह स्पष्ट करता है कि “मेरा उद्धार एक श्रद्धालु माता द्वारा एक बच्चे को छिड़काव का बपतिस्मा दिलाकर नहीं होगा, न ही मेरे मरने के बाद मेरे किसी मित्र या रिश्तेदार द्वारा मेरे लिए बपतिस्मा लेने या मास में भाग लेने से मेरा उद्धार होगा। मेरा उद्धार केवल मेरे ही कुछ करने से होगा।” यहां “मैं” ऐसा शब्द है जिसका अर्थ बहुत ही व्यक्तिगत है।

दारोगे द्वारा “करूं” शब्द का इस्तेमाल यह संकेत देता है कि कांप रहे हाथों वाला, डरा हुआ वह आदमी आधी रात को उद्धार की सिफारिश सुनने के लिए या उसके लिए कोई और विकल्प देने को नहीं कह रहा था। वह केवल वही सुनना चाहता था जो आवश्यक था अर्थात् यह कि उसके करने के लिए वही बातें उसे बताई जाएं। उसके द्वारा “क्या” शब्द का इस्तेमाल “करूं” के साथ जुड़ता है जिसमें वह कह रहा था, “जो जो काम मुझे करने

चाहिए उन्हें एक एक करके विस्तार से बता दीजिए।” वह चाहता था कि प्रचारक उसे घुमा फिराकर नहीं बल्कि स्पष्ट बता दे कि उसके लिए क्या करना आवश्यक है। कुल मिलाकर वह कितनी समझदारी का प्रश्न पूछ रहा था! उसके हर शब्द का महत्व था।

प्रचारकों का सीधा और साफ़-साफ़ उत्तर था “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर।” यह बात वास्तव में उन्होंने संदेश आरम्भ होने से पहले ही, संक्षेप में कही थी (प्रेरितों 16:32)। जो कुछ उन्होंने इन छह शब्दों में कह दिया था वह अगली बातों का सार होना था। बहुत अधिक सम्भावना है कि दारोगे ने न तो कभी “यीशु” नाम सुना था, और न सच्चे परमेश्वर का। इस उत्तर से वह अवश्य ही अवाक् होकर पूछने लगा होगा, “यह प्रभु यीशु कौन है?” इसलिए, उन्होंने तुरन्त पूरी तरह और विस्तारपूर्वक “प्रभु का वचन” सुनाया जिसमें उन बातों का उत्तर था जो दारोगे ने पूछी थीं।

कुछ लोगों को लगता है कि उद्धार केवल मसीह ही देता है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12), इसलिए पापी के लिए केवल इतना ही काफी है (कुलुस्सियों 3:11; देखिए 1 कुरिन्थियों 1:30) क्योंकि उसी में वह “भरपूर” होता है (कुलुस्सियों 2:10)। उनका कहना है कि क्योंकि एक मसीही बनने के लिए इस आज्ञा में सारी शर्तें बताई गई हैं इसलिए “प्रभु यीशु पर विश्वास” की आज्ञा में सब कुछ आ जाता है। परन्तु रूई में से पानी निचोड़ने की तरह, “विश्वास” शब्द को कितना निचोड़ा जा सकता है। यह कल्पना करना कि ऐसी प्रक्रिया से “केवल विश्वास” ही काफी है, प्रेरितों 16:31 और सम्पूर्ण नये नियम के आत्मा की प्रेरणा प्राप्त प्रचारकों को गलत ढंग से पेश करना है। “केवल विश्वास” से किसी का उद्धार नहीं हो सकता है (याकूब 2:19, 24; देखिए यूहन्ना 12:42)।

एक हजार के करीब श्रोताओं के सामने एक धार्मिक चर्चा में, “केवल विश्वास” की शिक्षा देने वाला एक प्रचारक “विश्वास कर, तो तू ... उद्धार पाएगा” को उद्धृत करने के बाद गुनगुनाने लगा, “इसमें पानी की एक बूंद भी नहीं है, देखो इसमें पानी की एक बूंद भी नहीं है।” इस प्रकार उसने बपतिस्मे का उपहास उड़ाने का प्रयास किया। उसके विरोधी ने उसकी मूर्खता को यह गाते हुए दिखाया, “इसमें पश्चात्ताप का एक शब्द भी नहीं है, देखो इसमें पश्चात्ताप का एक शब्द भी नहीं है।” “केवल विश्वास” का प्रचार करने वाले के तर्क के अनुसार, किसी का उद्धार पश्चात्ताप या मन फिराए बिना हो सकता है। “केवल विश्वास” का प्रचार करने वाले ने वास्तव में यही सिखाया था कि मन फिराने की आवश्यकता है, इसलिए श्रोता देख सकते थे कि वह कितना परस्पर विरोधी था और बपतिस्मे के विरुद्ध उसकी पूर्व धारणा ही थी।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में आत्मा की प्रेरणा प्राप्त प्रचारकों ने दारोगे और उसके परिवार को “प्रभु का वचन” खोलकर बताते हुए न केवल यीशु में भरोसा रखने बल्कि मन फिराने और बपतिस्मे की बात भी सिखाई थी। तथ्य यह है कि परमेश्वर के इन लोगों के घाव धोना उस दारोगे के पश्चात्ताप को ही दिखाता है। फिर, शास्त्र में आधी रात को उनके बपतिस्मे लेने की बात भी कही गई है। पूरा देखने के बाद, उस पहले दिए गए संक्षिप्त उत्तर

“प्रभु यीशु पर विश्वास कर” की ओर लौटकर हम देख सकते हैं कि “*विश्वास*” शब्द का इस्तेमाल एक व्यापक अर्थात्, एकमुश्त शब्द है जिसमें कम से कम तीन तत्व अर्थात् भरोसा, पश्चात्ताप और बपतिस्मा शामिल हैं।¹ पुनः, यदि कोई यह समझ लेता है कि सामान्य आज्ञा “विश्वास कर” से प्रचारकों का क्या अभिप्राय था, तो उसे यह समझ आ जाता है कि उन्होंने इस शब्द में आने वाली हर बात कही थी।

बपतिस्मे के लिए छिड़काव का समर्थन करने वाले कई बार यह दावा करते हैं कि दारोगे को जेल में बपतिस्मा दिया गया था, और इसलिए वहां पर डूब का बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता था। परन्तु पवित्र शास्त्र के अनुसार, जेल में किसी का बपतिस्मा नहीं हुआ था; क्योंकि प्रचारकों को “बाहर” ले जाया गया था (16:30)। वचन सुनाया गया था, लोगों ने बपतिस्मा लिया था, और फिर उन प्रचारकों को दारोगे के घर “में” (16:34) ले जाया गया था। बपतिस्मा बंदीगृह और दारोगे के घर के बीच के किसी स्थान पर हुआ था, जो किसी भी प्रकार छिड़काव का समर्थन नहीं है।

आज कई लोग, “हम डूब का बपतिस्मा देते हैं” कहकर सच्चाई से समझौता करते हैं। कोई ऐसे ही कह सकता है, “हम दांत पीसकर चबाते हैं,” या “चूमकर स्पर्श करते हैं।” डूब के अतिरिक्त बपतिस्मा देने का कोई और ढंग है ही नहीं। “हम डूब का बपतिस्मा देते हैं” कहने का तो अर्थ है कि बपतिस्मा देने का कोई और भी ढंग है।

कई लोग बपतिस्मे की “विधि” की भी बात करते हैं, जबकि बाइबल विधि के बारे में कुछ नहीं कहती। मजाक में कहें, तो कोई प्रेरितों 16:33 के किंग जेम्स के अनुवाद, “straightway” का इस्तेमाल करते हुए एक लम्ब की विधि को “सिद्ध” कर सकता है। परन्तु हिन्दी में इसका अर्थ “तुरन्त” है अर्थात् यह आयत यह नहीं बताती कि शरीर को पानी में किस रीति से रखा गया था। बपतिस्मे के लिए अलग-अलग विधियाँ (पीछे की ओर लेटकर, आगे की ओर झुककर, सीधा नीचे बैठकर) इस्तेमाल की गई हो सकती हैं, परन्तु किसी के बारे में भी स्पष्ट नहीं बताया गया। परमेश्वर ने किसी विशेष विधि का इस्तेमाल करने का निर्देश नहीं दिया है; उसने तो केवल यही निर्देश दिया है कि बपतिस्मा डुबकी से हो।

छिड़काव को बपतिस्मा कहने वाले लोग यह कहते हुए कि वहां बच्चे भी होंगे, कई बार दारोगे के समस्त परिवार के बपतिस्मे की बात को पकड़ लेते हैं। परन्तु बाइबल दिखाती है कि परिवार में सब लोग इतने बड़े थे कि वे वचन सुनने (प्रेरितों 16:32), बपतिस्मा लेने के बाद, आनन्द कर सकते थे (16:34)। फिर तो शास्त्र से देखने के बाद यह निष्कर्ष निकालना पड़ेगा कि इस वृत्तांत में नवजात शिशुओं के बपतिस्मे की कोई बात नहीं है।

दारोगे के मन परिवर्तन का वर्णन बपतिस्मे के दो बड़े तथ्यों को दिखाता है। पहला, बपतिस्मे के कार्य तक वहां उत्तेजना और उत्सुकता थी। उसके बाद ही दारोगा और उसके परिवार के लोग आराम करने, आनन्द करने और रात का भोजन लेने के लिए तैयार हुए थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में ऐसा कहीं नहीं लिखा गया है कि कोई पापी, बपतिस्मा लेने से पहले खा-पीकर यीशु में विश्वास लाया हो। दूसरा, इस वृत्तांत में बपतिस्मे का महत्व इस

तथ्य में दिखाया गया है कि इसे लेने में देरी नहीं की गई, क्योंकि उन्होंने आधी रात को ही बपतिस्मा ले लिया। इससे नये नियम के प्रचार में दी गई आज्ञा के महत्व का पता चलता है। बपतिस्मे को किसी अन्य विशेष अवसर के लिए या सुबह होने तक टालने का अर्थ, अपने उद्धार को टालना है।

पाद टिप्पणी

¹यह प्रेरितों 16:31 में लागू होता है, परन्तु सारी आयतों में नहीं जहां “विश्वास” शब्द आता हो। उदाहरण के लिए याकूब 2:19 कहता है कि “दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथरते हैं”; परन्तु दुष्टात्माओं के विश्वास में किसी भी प्रकार परमेश्वर की आज्ञा मानने की कोई बात नहीं मिलती।